कृषिवानिकी करेगी गौरैया का सरंक्षण

केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान में 20 मार्च 2021 को विश्व गौरैया दिवस मनाया गया । कार्यक्रम की शुरुआत आईसीएआर कुलगीत के साथ हुई और कार्यक्रम में सबसे पहले डॉ आशाराम ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस समारोह में विशिष्ट अतिथि डॉ ऐश्वर्य माहेश्वरी, सहायक प्राध्यापक, बांदा कृषि विश्वविद्यालय और मुख्य अतिथि डॉ. संजय कुमार शुक्ला, अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्यप्रदेश मौजूद रहे। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. ए. अरुणाचलम ने की। डॉ माहेश्वरी ने बताया कि भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गौरैया की संख्या में करीब 60 प्रतिशत तक कमी आ गई है और गौरैया की घटती संख्या पर भी उन्होंने चिंता व्यक्त की । माहेश्वरी ने यह भी बताया कि पर्यावरण संतुलन के लिए और बेहतर पारिस्थितिकी तंत्र बनाए रखने के लिए गौरैया जैसे पक्षियों का अहम योगदान है । डॉ संजय कुमार शुक्ला ने बताया कि पर्यावरण संतुलन के लिए धरती पर पेड़ों की संख्या बढ़ाना बहुत आवश्यक है। चाहे वन क्षेत्र में हो या वन क्षेत्र के बाहर किसानों के खेतों पर, कृषिवानिकी के रूप में पेड़ जितने अधिक होंगे वहां पारिस्थितिकी तंत्र भी उतना ही मजबूत होगा और पर्यावरण संतुलन भी बना रहेगा और संपूर्ण मानव समाज के लिए भी हितकर होगा । उन्होंने बताया कि विश्व में गौरैया की 26 प्रजातियों में से 5 प्रजातियां भारत में पाई जाती है और हमें गौरैया के संरक्षण पर भी जरूरत ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि गौरैया का कम होना हमारे पर्यावरण संतुलन के बिगड़ने का संकेत है जिससे हमको आने वाले समय में खामियाजा भुगतना पड़ेगा । डॉ शुक्ला ने बताया कि हम सबको गौरैया के लिए घरौंदा बनाना और उनके लिए दाना–पानी की व्यवस्था करना और चिड़िया को देखना दैनिक शौक में शामिल करना चाहिए। संस्थान के निदेशक डॉ. ए. अरुणाचलम ने बताया कि गौरैया हमेशा मनुष्यों की बस्तीयों के आसपास ही रही है लेकिन अब घर आंगन में चहकने वाली गौरैया कम होती जा रही है जिसका संरक्षण बहुत आवश्यक है । निदेशक ने बताया कि कृषिवानिकी में पशु–पक्षी भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं और कृषिवानिकी न केवल जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने में सहायक है अपितु कृषिवानिकी से विभिन्न प्रकार की पारिस्थितिकीय सेवाएं भी मिलती हैं । गौरैया फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीड़ों को खाती है इस प्रकार से गौरैया किसानों के लिए भी हितकारी है। इस अवसर पर संस्थान में कृषिवानिकी आधारित समेकित कृषि प्रणाली में बतखों को मछली तालाब में छोड़ा गया और जोर दिया कि कृषिवानिकी अपनाने से गौरैया जैसे पक्षियों के संरक्षण में मदद मिलेगी । उन्होंने बताया कि केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान एक जैव विविधता आधारित मनोरंजन स्थल विकसित करने के लिए प्रयासरत है । कार्यक्रम का संचालन डॉ नरेश कुमार ने और धन्यवाद ज्ञापन डॉ सुशील कुमार ने किया।

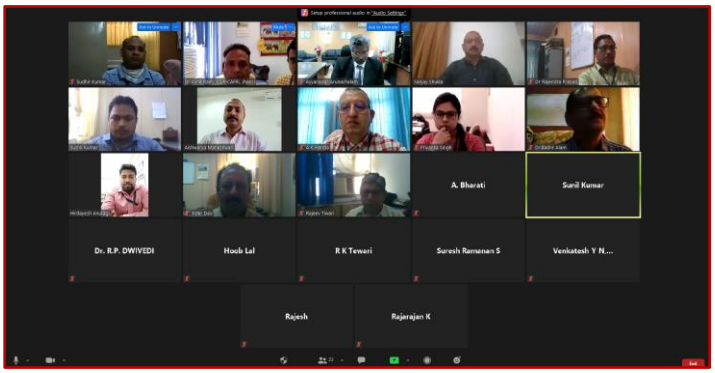
A. Bharati
Sunil Kumar
Dr. R.P. DWIVEDI
Hoob Lal
R K Tewari
Suresh Ramanan S
Venkatesh Y N...
Rajesh
Rajarajan K

WORLD
SPARROW DAY
20 March, 2021

WORLD
SPARROW DAY
BIRDS IN AGROFORESTRY
20 March, 2021
ICAR-Central Agroforestry Research Institute, Jhansi